

भगत रविदास – सबद २७
ऊचे मंदर साल रसोई ॥
राग सूही, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ७९४

ऊचे मंदर साल रसोई ॥
एक घरी फुनि रहनु न होई ॥ १ ॥
इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥
जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
भाई बंध कुटंब सहेरा ॥ ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥ २ ॥
घर की नारि उरहि तन लागी ॥
उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥ ३ ॥
कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥
हम तउ एक रामु कहि छूटिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

सार: जिसे हम सुरक्षा समझते हैं, वह अक्सर इस निर्णय से उपजती है कि हम यथार्थ पर सवाल उठाना बंद कर देते हैं और उसकी कमज़ोरी को अनदेखा कर देते हैं। हम अस्थायी उपलब्धियों को स्थायी सच मान लेते हैं और उन्हें बचाने की निरंतर चिंता में जीते हैं। यह कमज़ोरी सिर्फ चीज़ों तक ही सीमित नहीं है, यह सुरक्षा के लिए इन चीज़ों पर हमारी निर्भरता में है जिससे खोने का डर पैदा होता है। जब चीज़ों का अस्थायी होना सामने आता है तब हम इनकार कर नश्वर वस्तुओं से और अधिक बंध जाते हैं। वास्तविक चुनौती स्पष्टता और जागरूकता से स्थिरता पाना है। इसे अपनाकर, जब चीज़ें मिटती हैं तब भी हम टूटते नहीं क्योंकि हमारी शक्ति और पहचान उन अस्थायी तत्वों से नहीं जुड़ी होती जिन्हें खोना सहज है।

ऊचे मंदर साल रसोई ॥

किसी के पास ऊँची-ऊँची हवेलियाँ और भव्य रसोइयाँ हो सकती हैं। यह भौतिक धन, बौद्धिक उपलब्धि और ज्ञान के संचय का प्रतीक है जो अक्सर केवल सुरक्षा की एक भ्रमक, झूठी भावना को बढ़ावा देने का काम करता है।

एक घरी फुनि रहनु न होई ॥ १॥

जब अंत आता है तब कोई एक पल भी ज़्यादा नहीं ठहर सकता। यह स्पष्ट स्थिरता के नीचे छिपी अस्थिरता को दर्शाता है जिससे सभी उपलब्धियाँ तुच्छ एवं अर्थहीन लगने लगती हैं। (१)

इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥

यह शरीर सूखी घास से बनी अस्थायी झोपड़ी की शरण की तरह नाज़ुक है। यह रूपक हमारे शारीरिक रूप की अंतर्निहित कमज़ोरी को रेखांकित करता है।

जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥ १॥ रहाउ ॥

जब घास जलती है तब वह अविभेदित हो, मिट्टी में मिल जाती है। यह शरीर के तत्वों में विलीन होने का रूपक है जब यह धूल में मिल जाता है तब अपनी पिछली पहचान का कोई निशान नहीं छोड़ता। (१)(विराम)

भाई बंध कुटंब सहेरा ॥

भाई-बहन, रिश्तेदार, परिवार और दोस्त। यह उस सामाजिक जाल को सूचीबद्ध करता है जिससे हमारी सांसारिक पहचान और अपनेपन की भावना का निर्माण होता है।

ओइ भी लागे काहु सवेरा ॥ २॥

वह भी पीछे हटने लगते हैं और चाहते हैं कि सुबह होते ही यह चला जाए। यह मृत्यु के पश्चात शरीर के निधन पर होने वाले स्वाभाविक अलगाव को दर्शाता है। (२)

घर की नारि उरहि तन लागी ॥

वह साथी, जिसने इस शरीर को स्नेह भरी निकटता से अपनाया था।

उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥३॥

वह अब 'भूत! भूत!' चिल्ला कर भागती है। यह उस मानसिक परिवर्तन को दर्शाता है जहाँ प्रिय वस्तु जो कभी चाही जाती थी, जीवन-शक्ति के लुप्त होते ही भय का कारण बन जाती है। (३)

कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥

रविदास कहते हैं कि पूरी दुनिया लूटी गई है। यह बताता है कि कोई भी अपने प्रियजन को खोने से या हमारे अस्थायी रूपों के मोह से धोखा खाने से बचा नहीं है।

हम तउ एक रामु कहि छूटिआ ॥४॥३॥

हालांकि, मैं उस सर्वव्यापी वास्तविकता से जुड़कर इस जाल से बच गया हूँ। यह बताता है कि मुक्ति नाशवान शरीर से नहीं बल्कि अविनाशी चेतना से अपनी पहचान जोड़ने में है। (४)(३)

तत्त्व: भगत रविदास जीवन की कठिन सच्चाइयों का सामना करते हैं और हमसे उन चीज़ों के बारे में अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार करने का आग्रह करते हैं जिन्हें हम स्थायी मानते हैं। वह बताते हैं कि जिन ढांचों और रिश्तों को हम संजोते हैं, वह तभी तक आराम देते हैं जब तक वह विद्यमान रहते हैं। एक बार जब वह नष्ट हो जाते हैं तब हमारे रिश्तों के बावजूद, हम उनके भौतिक रूप से कटाव अनुभव करते हैं। यह अंतर्दृष्टि हमें चुनौती देती है कि क्या शरीर से हमारा लगाव सही है या हमें चेतना के सार, सर्वव्यापी जीवन शक्ति को समझने पर ध्यान देना चाहिए। इन सवालों पर विचार करके, हम यह जान सकते हैं कि हमारे जीवन में वास्तव में क्या मूल्य व सार्थकता रखता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com